गुरुवार, 1 फरवरी 2018
जनसंदेश टाइम्स

पांडुलिपियां राष्ट्रीय धरोहर

बोले महेश्वरी

कहा इनसे परंपरा का संरक्षण हुआ, संसार की प्राचीन लिपि ब्राह्मी

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के क्षेत्रीय कार्यालय का आयोजन

पार्श्वनाथ विद्यापीठ के साथ आयोजन का समापना समारोह

वाराणसी। संसार की प्राचीन लिपि ब्राह्मी है, अन्य लिपियों का विकास इसी से हुआ है। इस लिपि का पहला प्रयोग महर्षि पाणिनि ने किया है। ऐसे लिपियों के संरक्षण की आवश्यक्ता है।

यह बातें अध्यक्षीय संबोधन में लिपि विज्ञान के अधिकारी विद्वान प्रो.महेश्वरी प्रसाद ने कही। वह इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र क्षेत्रीय केंद्र एवं पार्श्वनाथ विद्यापीठ के ओर से आयोजित लिपि विज्ञान एवं पांडुलिपिविज्ञान कार्यशाला के समापन सत्र में मंगलवार को कही। इस अवसर पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डा.विजय शंकर शुक्ल ने स्वागत भाषण एवं विद्वानों का परिचय प्रदान किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि व्याकरण शास्त्र के ख्यातिलब्ध विद्वान प्रो.जयशंकर लाल त्रिपाठी लिपि प्राचीन काल में प्रचलित थी। इसका प्रमाण शकुंतला को दिए दुष्यंत की अंगूठी पर उनका नाम, रामसेतु बनाते समय पत्थर पर लिखे गए रामनाम लिखा जाना इस बात का प्रमाण है। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद दिल्ली के सदस्य सचिव प्रो.रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि ज्ञान परंपरा तथा छिपी हुयी ज्ञानराशि को प्रकाश में लाया जा सकता है।

इसमें मुख्यरूप से मलयालम एवं नेवारी लिपि का प्रशिक्षण दिया गया। इसमें देश के भिन्न-भिन्न विश्वविद्यालयों से कुल 33 प्रतिभागी भाग लिए। इसमें प्रतिभागियों को लिपि विज्ञान एवं पांडुलिपि विज्ञान तथा संपादन के सिद्धांत के विष्य में जानकारी देते हुए देश के भिन्न-भिन्न विश्वविद्यालयों से लगभग 27 विशिष्ट व्याख्यान हुए। इस आयोजन के दौरान प्रो.सीताराम दुबे, प्रो.आशोक सिंह, प्रो.गोपबंधु मिश्र, प्रो.रेवा प्रसाद द्विवेदी,प्रो.सदाशिव कुमार द्विवेदी, प्रो.कमलेश दत्त त्रिपाठी, डा.संजीव सराफ,डा.अभिमन्यू सिंह, प्रो.सुमन जैन, डा.रचना शर्मा, डा.नरेंद्र दत्त तिवारी, डा.रजनीकांत त्रिपाठी और संजय सिंह आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम की रूप रेखा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के परियोजना सहयोगी डा.त्रिलोचन प्रधान ने प्रस्तुत की। धन्यवाद ज्ञापन पार्श्वनाथविद्यापीठ के पुस्ताकालय अध्यक्ष डा.ओमप्रकाश ने की।